

साँटा पुं. (तद्.) 1. मोटे कपड़े का कोड़ा 2. घोड़े को लगाई जाने वाली एड़ 3. गन्ना, ईख 4. करघे के आगे लगा हुआ वह डंडा जिसे ऊपर-नीचे करने से ताने के तार ऊपर-नीचे होते हैं।

साँटि स्त्री. (तद्.) 1. मेलजोल 2. खरीदने-बेचने की बातचीत उदा. लोभ लगे हरि रूप के, करी साँटि जुरि जाइ/हौं इन बेची बीच हीं, लोइन बड़ी बलाइ-बिहारी (195)।

साँटिया पुं. (तद्.) डुग्गी पीटने, बजाने वाला, सार्वजनिक घोषणा करने के लिए डुग्गी पीटने वाला।

साँटी स्त्री. (तद्.) 1. पीटने की छड़ी या कपड़े का कोड़ा, साँट 2. साँठ-गाँठ 3. प्रतिशोध, बदला।

साँटे क्रि.वि. (देश.) बदले में उदा. हाइ गला माटी गली, सिर साँटे ब्यौहार। कबीर साखी, 45/28

साँटेमार पुं. (तद्.) सिपाही, द्वारपाल, प्रहरी। वह चोबदार या सिपाही जो हाथ में साँटा या कपड़े का बना हुआ कोड़ा रखता और आवश्यकता पड़ने पर भीड़ हटाने, घोड़े, हाथियों आदि को वश में करने के लिए उन पर साँटे चलाता है टि. मध्य युग में राजाओं की सवारी के साथ साँटेमार चलते थे।

साँठ पुं. (तद्.) गन्ना, डंडा, सरकंडा, संबंध, मेल-मिलाप, धन, पूंजी पुं. (देश.) पैरों का एक आभूषण।

साँठ-गाँठ स्त्री. (तद्.) हेल-मेल, गुप्त संबंध, साजिश। मुहा. साँठ-गाँठ होना- दो या अधिक लोगों का भीतर-भीतर एक होना, गुप्त रूप से परस्पर प्रेम होना।

साँठना स.क्रि. (तद्.) पकड़े रहना, हाथ में लेना, ग्रहण करना।

साँठा पुं. (तद्.) सरकंडा, गन्ना।

साँठि स्त्री. (तद्.) साँठ, पूंजी, धन उदा. बाम्हन तहवाँ लेइका गाँठि साँठि सुठि थोर -जायसी।

साँठी स्त्री. (तद्.) 1. सरकंडे का भाग उदा. साँठी साँठी झड़ि पड़ी, भलका रहा सरीर -कबीर 2. सारहीन पदार्थ।

साँठे क्रि.वि. (तद्.) 1. बंधे हुए उदा. बलि-बलि गए चलि बात के साँठे -तुलसी 2. नथे हुए।

साँड/साँड़ पुं. (तद्.) 1. गौ का वह नर जो उत्तम संतति उत्पन्न करने के उद्देश्य से बिना बधिया किए पाला गया हो, जिसे खेत जोतने, बोझ ढोने के काम में नहीं लिया जाता 2. हिंदुओं में किसी मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ा हुआ वृषभ वि. शक्तिशाली, मोटा-ताजा, आवारा, लंपट ला.अर्थ वह व्यक्ति जो हष्ट-पुष्ट हो तथा लड़ने-भिड़ने और उत्पात करने में तेज तथा स्वतंत्र हो मुहा. साँड की तरह घूमना- बिल्कुल स्वतंत्र और निश्चित रह कर इधर-उधर घूमते रहना; साँड की तरह डकारना- मदमत्त होकर अभिमानपूर्वक जोर-जोर से बातें करना या चिल्लाना 3. वह घोड़ा जिसे जोता न जाता हो, बल्कि घोड़ियों से संतान उत्पन्न करने के लिए पाला जाता हो।

साँड़नी स्त्री. (तद्.) सवारी के काम में आने वाली तथा बहुत तेज दौड़ने वाली ऊँटनी।

साँडसी स्त्री. (देश.) सँडसी टि. रसोई के काम में आने वाला एक तरह का कैंचीनुमा उपकरण, जिसके द्वारा बटकोई, तसला आदि चूल्हे पर से उतारे जाते हैं।

साँड़ा पुं. (तद्.) छिपकली की जाति का एक जंतु जिसकी चरबी से निकला हुआ तेल दवा के काम आता है।

साँड़िया पुं. (देश.) 1. तेज रफ्तार वाला ऊँट 2. उक्त प्रकार के ऊँट का सवार।

साँड़ी स्त्री. (देश.) साढ़ी, दूध की मलाई उदा. कुम्हरा के घरि हाँड़ी आछे अहीरा के घर साँड़ी -गोरखनाथ।

साँति/साँती स्त्री. (तद्.) शांति उदा. बिनु आधार मन तोष न साँती -तुलसी।